# इकाई 1 पलभा, चरखण्ड, उदयमान

**संरचना**


1.0 उद्देश्य

1.1 प्रस्तावना

1.2 पलभा, चरखण्ड, उदयमान

1.3.1 पलभा बनाने की विधि

1.3.2 चरखण्डानयन

1.3.3 अयनांश निकालने की विधि

1.4 वर्तमान उदाहरण के अनुसार पलभा अयनांश तथा लग्न एवं स्पष्ट ग्रह, चरखण्ड तथा उदयमान के उदाहरण

1.4.1 लंकोदय से स्वोदयमान बनाने की विधि

1.4.2 काशी की पलभा से चरखण्ड का ज्ञान

1.4.3 पलभा –चरखण्ड – उदयमान – अयनांश स्पष्ट सूर्य से लग्न साधन

1.4.4 जन्मांक चक्र का निर्माण

1.5 सांराश

1.6 शब्दावली

1.7 बोध प्रश्न/अभ्यास प्रश्न

1.8 उपयोगी पुस्तकें


## 1.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से आप लोग पूर्णतया पलभा ,चरखण्ड, उदयमान का साधन कर पायेगें

- पलभा ज्ञान के साथ इसके बनाने की विधि का अध्ययन करेगें।
- चरखण्डानयन का अध्ययन करेगें।
- अयनांश निकालने की विधि को जानेगें।
- वर्तमान समय के अनुसार पलभा, अयनांश तथा लग्न एवं स्पष्ट ग्रह चरखण्ड तथा उदयमान के उदाहरण का अध्ययन कर पायेगें।
- लंकोदय से स्वदेशीय उदयमान बनाने के नियम के बारे में जानकारी कर पायेंगे।
- काशी की पलभा से चरखण्ड का ज्ञान करेगें
- लंकोदयमान से उदयमान बनाने की विधि को जानेगें
- वाराणसी ( काशी ) के उदयमान को जानेगें।
- पलभा, चरखण्ड, स्वोदयमान, अयनांश स्पष्ट सूर्य से लग्न साधन कर पायेगें।
- जन्मांक चक्र का निर्माण कर पायेगें।

## 1.1 प्रस्तावना

द्वितीय खण्ड की प्रथम इकाई में आपका स्वागत है।

हमारे भारतीय महर्षियों (ज्योतिष शास्त्र के प्रवर्त्तकों) ने जन्मकाल के समय आकाश में स्थित ग्रह–नक्षत्रों के आधार पर जिस शास्त्र का प्रवर्तन किया वह ज्योतिष शास्त्र कहलाया। इस जन्म समय का जितना ही सूक्ष्म समय लिया जाएगा उतना ही तात्कालिक ग्रह का ज्ञान भी स्पष्ट होगा। उतनी ही उस जातक के जीवन के रहस्य के बारे में अथवा जीवन के घटना के बारे में सूक्ष्मज्ञान किया जा सकता हैं। अतः पलभा, चरखण्ड,उदयमान की सूक्ष्मता का ज्ञान करके अगर यदि लग्न स्पष्ट एवं ग्रह स्पष्ट करते हैं तो निश्चित रूप से फल को समझने का एक उत्तम पथ होगा और जातक के जीवन के घटनाओं को अच्छी तरह बताकर ज्योतिष शास्त्र के माध्यम से आप लोग समाज को पूर्णतया लाभ दे सकते हैं। इसलिए इस इकाई का अध्ययन परम आवश्यक है।

## 1.2 पलभा, चरखण्ड,उदयमान

### पलभा

सर्वप्रथम आइए इस बात का विचार करते हैं कि पलभा है क्या?

तो इसके उत्तर में आप लोगों को इस बात की जानकारी होनी चाहिए कि सायन मेष या तुला के प्रारम्भ के दिन मध्यांह्न में 12 अंगुल की शंकु की छाया को पलभा कहते हैं।

अक्षांश स्पर्श रेखा को 3 से गुणाकर 2500 सौ का भाग देने से पलभा आती है।

**मेशादिगे सायनभागसूर्ये**
**दिनार्धजा या पलभा भवेत् सा ।**
**त्रिश्ठा हतास्युर्दषभिर्भुजंगै –**
**र्दिग्भिष्चरार्धानि गुणोद्धृताऽन्त्या ।।**

**चरखण्डः** –पलभा को तीन स्थानों पर रखकर क्रमशः 10,8, और 10/3 से गुणा करने पर चरखण्ड प्राप्त होते हैं तथा चरखण्डों को लंकोदय मान में ऋण या धन करने से अपने स्थान का उदयमान प्राप्त होता है। यह उदयमान पलात्मक होता है। वस्तुतः किसी भी स्थान पर मेसादि राशियों के क्षितिज पर उदित होने में लगने वाला समय ही उदयमान (पलात्मक अथवा अस्वात्मक) होता है।

**उदयमान** – लंका में (निरक्ष देश में ) 278 ,299, 323 ये पल क्रम से मेषादि तीन राशियों के एवं उत्क्रम से उक्त पल कर्कादि तीन राशियों के उदयपल होते हैं। इस प्रकार मेषादि 6 राशियों के उदयमान होते हैं। कन्या से मेष पर्यन्त उत्क्रम से जो उदयमान हैं वे तुलादि क्रम से मीन पर्यन्त 6 राशियों के उदयमान होते हैं।

साक्ष देशों में मेषादि तीन राशियों के लंकोदय में चर खण्डों को घटाने से मेषादि के स्वोदयमान प्राप्त होते हैं एवं कर्कादि 3 राशियों के लंकोदय में चरखण्डों को उत्क्रमरीति से जोड़ने से कर्कारि 3 6 राशियों के स्वोदयमान प्राप्त होते हैं। कन्या से मेष पर्यन्त उत्क्रम 6 राशियों के उदयमान हुए हैं उन्हें तुलादि से मीन पर्यन्त 6 राशियों का स्वोदयमान जानना चाहिए।

## 1.3.1 पलभा बनाने की विधि

**नियम नं. (1) –** इष्ट स्थान की पलभा साधन के लिए आगे पीछे के अक्षांशों की पलभा का अन्तर कर उसको अक्षांश कला से गुणाकर 60 से भाग देने पर फल व्यंगुलादि आयेगा। उसे गत अक्षांश की पलभा में जोडने से इष्ट अक्षांश की पलभा होगी ।

जैसे – माना कि इष्ट अक्षांश 24 ।40 हैं। 24 अक्षांश की पलभा 5। 20 है । तथा 25 अक्षांश की पलभा 5 ।35 है अत : (5। 35) – (5। 20) = 0। 15 आया इसको अक्षांश कला 40 से गुणा करने पर 15

40 = 600 । इसमें 60 का भाग देने से लब्धि व्यंगुल = 10 प्राप्त हुआ । अतः 5। 20 + 0 ।10 = 5 ।30 इष्ट स्थान की पलभा प्राप्त हुई।

**नियम नं. (2) –**प्रत्येक नगर की पलभा अपने स्थान के अक्षांशो पर से नीचे दी गयी सारणी पर से ज्ञात की जा सकती है।

**पलभा ज्ञान सारणी 5 अक्षांश से 10 अक्षांश तक पलभा ज्ञान सारणी**

| अक्षांश | पलभा (अंगुलात्मक) |
|---|---|
| 5 | 1 । 3 । 0 |
| 6 | 1 । 15 । 44 |
| 7 | 1 । 28 । 23 |
| 8 | 1 ।41 ।10 |
| 9 | 1 । 54 । 0 |
| 10 | 2 । 6 । 54 |

**।। 11 अक्षांश से 40 अक्षांश तक पलभा ज्ञान सारणी ।।**

| | | | |
|---|---|---|---|
| 11 अक्षांश की अंगुलात्मक पलभा | 2 । 19 । 55 | 26 अक्षांश की अंगुलात्मक पलभा | 5 । 51 । 7 |
| 12 अक्षांश की अंगुलात्मक पलभा | 2 । 33 । 0 | 27 अक्षांश की अंगुलात्मक पलभा | 6 । 6 । 50 |
| 13 अक्षांश की अंगुलात्मक पलभा | 2 । 46 । 12 | 28 अक्षांश की अंगुलात्मक पलभा | 6 । 22 । 48 |
| 14 अक्षांश की अंगुलात्मक पलभा | 2 । 59 । 28 | 29 अक्षांश की अंगुलात्मक पलभा | 6 । 39 । 4 |
| 15 अक्षांश की अंगुलात्मक पलभा | 3 । 12 । 54 | 30 अक्षांश की अंगुलात्मक पलभा | 6 । 55 । 41 |
| 16 अक्षांश की अंगुलात्मक पलभा | 3 । 26 । 24 | 31 अक्षांश की अंगुलात्मक पलभा | 7 । 12 । 36 |
| 17 अक्षांश की अंगुलात्मक पलभा | 3 । 40 । 5 | 32 अक्षांश की अंगुलात्मक पलभा | 7 । 29 । 53 |
| 18 अक्षांश की अंगुलात्मक पलभा | 3 । 53 । 56 | 33 अक्षांश की अंगुलात्मक पलभा | 7 । 47 । 31 |
| 19 अक्षांश की अंगुलात्मक पलभा | 4 । 7 । 55 | 34 अक्षांश की अंगुलात्मक पलभा | 8 । 5 । 38 |
| 20 अक्षांश की अंगुलात्मक पलभा | 4 । 22 । 1 | 35 अक्षांश की अंगुलात्मक पलभा | 8 । 24 । 7 |
| 21 अक्षांश की अंगुलात्मक पलभा | 4 । 36 । 22 | 36 अक्षांश की अंगुलात्मक पलभा | 8 । 43 । 5 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 22 अक्षांश की अंगुलात्मक पलभा | 4 । 50 । 52 | 37 अक्षांश की अंगुलात्मक पलभा | 9 । 2 । 35 |
| 23 अक्षांश की अंगुलात्मक पलभा | 5 । 5 । 38 | 38 अक्षांश की अंगुलात्मक पलभा | 9 । 22 । 30 |
| 24 अक्षांश की अंगुलात्मक पलभा | 5 । 20 । 31 | 39 अक्षांश की अंगुलात्मक पलभा | 9 । 43 । 1 |
| 25 अक्षांश की अंगुलात्मक पलभा | 5 । 35 । 42 | 40 अक्षांश की अंगुलात्मक पलभा | 10 । 4 । 9 |

अब आप लोगों के समक्ष आरा जिला की पलभा बनाकर उपरोक्त नियम के अनुसार बताया जायेगा ।

आरा का अक्षांश 25।30 है। पलभा सारणी में 25 अक्षांश की पलभा 5। 35 । 42 लिखा है। अब 30 कला की पलभा निकालने के लिए 25 अंश और 26 अंश के पलभा कोष्ठकों का अन्तर कर अनुपात द्वारा 30 कला की पलभा निकाल कर 25 अक्षांश की पलभा में जोड़ने से आरा जिला की पलभा आ जायेगी ।

26 अक्षांश की पलभा = 5 । 51 । 07

25 अक्षांश की पलभा = 5 । 35 । 42 में से घटाया

= 00 । 15 । 25 आया

अब घटाने पर जो फल आया 15 । 25 यह एक अंश अर्थात 60 कला की पलभा हुई। इसे 30 से गुणाकर 60 का भाग देने पर 30 कला की पलभा आ जायेगी।

15 । 25 × 30 = 450 । 750 ÷ 60 = 7 । 42

अब इस फल को 25 अक्षांश की पलभा में 5 । 35 । 42 में 30 कला की पलभा 7 । 42 को जोड़ने से 5 । 43 । 24 आया यही आरा जिला का अंगुलादि पलभा होगा ।

अब इस उपरोक्त नियम के अनुसार आप लोग किसी भी स्थान का पलभा बना सकते हैं।

### 1.3.2 चरखण्डानयन

मेषादि 12 राशियों के लंकोदयमान इस प्रकार है।

| | |
|---|---|
| **मेष** | **278** |
| वृष | **299** |
| मिथुन | **323** |
| **कर्क** | 323 |
| **सिंह** | **299** |
| **कन्या** | **278** |
| तुला | 278 |
| वृश्चिक | 299 |
| धनु | 323 |
| मकर | 323 |
| कुम्भ | 299 |

अब यहां पर स्वदेशीय पलभा

(5 ।30 ) × 10 = 55 । 0 = प्रथम चरखण्ड हुआ ।

(5 ।30 ) × 8 = 40 । 240 =44 द्वितीय चरखण्ड हुआ ।

55 में 3 का भाग देने से = 18 ये तृतीय चरखण्ड हुआ । अतः 55 ।44 ।18 ये चरखण्ड सिद्ध हुआ ।

अब यहां उपरोक्त साधित चरखण्ड मेषादि 3 राशि में ऋण तथा कर्कादि 3 राशि में उत्क्रम से धन करने पर स्वदेशीय मेषादि 6 राशियों का उदयमान होगा । ये ही विलोम से तुलादि राशियों का स्वोदयमान होगा –

| लंकोदयमान | | चरखण्ड | | स्वदेशीय उदयमान | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 278 | – | 55 | = | मेष | 223 | मीन |
| 299 | – | 44 | = | वृष | 255 | कुम्भ |
| 323 | – | 18 | = | मिथुन | 305 | मकर |
| 323 | + | 18 | = | कर्क | 341 | धनु |
| 299 | + | 44 | = | सिंह | 343 | वृश्चिक |
| 278 | + | 55 | = | कन्या | 333 | तुला |

द्वितीय उदाहरण :– अब यहां पर आरा जिला की पलभा 5 अंगुल 43 प्रत्यंगुल है। इसे तीन स्थानों में रखा और क्रिया तो ।

(5 । 43) × 10 = 57 । 10

(5 । 43) × 8 = 45 । 44

(5 । 43) × 10 / 3 = 19 । 3

## 1.3.3 अयनांश निकालने की विधि

लग्न साधन के लिए अयनांश तथा स्वदेशीय उदयमान की आवश्यकता होती है। अतः सर्वप्रथम अयनांश साधन किया जाता है।

अयनांश निकालने की बहुत सारी विधियां प्रचलित हैं परन्तु वर्तमान में साधारणतया ज्योतिर्विद,ग्रहलाघव, मकरन्द और सूर्य सिद्धान्त इन तीन ग्रन्थों के आधार पर अयनांश निकालते हैं। ग्रहलाघव की विधि निम्न प्रकार से है–

इष्ट शाके वर्ष जो पंचाग में लिखा रहता है उसमें से 444 घटाकर शेष में से 60 का भाग देने से अयनांश होता है ।

जैसे :– शाके 1866 – 444 = 1442 ÷ 60 = 23 । 42 अयनांश हुआ ।

मकरन्द विधि :– इष्ट शाके वर्ष में 421 घटाकर शेष को दो स्थान में रखें, एक स्थान में 10 से भाग देकर लब्धि को द्वितीय स्थान में से घटावें । जो शेष आवे उसमें 60 का भाग देने से अयनांश आता है।

जैसे :– 1866 – 421 = 1445

1445 ÷ 10 = 144 । 30 लब्धि ।

1445 । 00 में से

– 144 । 30 लब्धि को घटाया

1300 । 30 शेष रहा , अब इसमें 60 का भाग दिया ।

ते अयनांश आया 21 । 40 ये अयनांश हुआ ।

लंकोदया विघटिका गजभामि गोङ्क –

दसास्त्रिपक्षदहना क्रमगोत्क्रमस्था : ।

हीनान्विताष्चरदलैः क्रमगोत्क्रमस्थै –

मैंषादितो घटत उत्क्रमतस्त्विमे स्यु : ।।

(ग्रहलाघव त्रिप्रश्नाधिकार श्लोक सं. 1 )

इन चर खण्डों का वेधोपलब्ध पलात्मक राशि में संस्कार किया तो आरा जिला का उदयमान आया ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| मेष | 278 – 57 । 10 | = 220 । 50 | = मीन |
| वृष | 299 – 45 । 44 | = 253 । 16 | = कुम्भ |
| मिथुन | 323 – 19 । 3 | = 303 । 57 | = मकर |
| कर्क | 323 + 19 । 3 | = 342 । 3 | = धनु |
| सिंह | 299 + 45 । 44 | = 344 । 44 | = वृश्चिक |
| कन्या | 278 + 57 । 10 | = 335 । 10 | = तुला |

यथा : –

## 1.4 पलभा चरखण्ड,उदयमान एवं लग्न स्पष्ट का उदाहरण

श्री संवत् 2077 शाके 1942 उत्तरायण दक्षिण गोल वसन्त ऋतु चैत्र मास कृष्णपक्ष तदनुसार अंग्रेजी दिनांक 12/04/2021 को किसी जातक का जन्म दिन में ठीक 10 बजकर 22 मिनिट पर वाराणसी में हुआ।

अतः वाराणसी का अक्षांश 25 ।18 ,पलभा 5 । 45 अर्हगण 2281, अयनांश 24 । 8 । 15 है । दिनमान 31 । 21 इस दिन का पंचांग है।

इस दिन सूर्योदय के समय अभावस्या तिथि है जो 3घटी 6पल प्रातः 6 बजकर 58 मिनिट तक है। जन्म के समय वर्तमान तिथि प्रतिपदा, दिन सोमवार, रेवती नक्षत्र 12 घटी, 19पल, अर्थात् दिन में 10 बजकर 40 मिनिट तक तथा बिता हुआ नक्षत्र उत्तराभाद्रपद 7 घटी , 6 पल, दिन में 8 बजकर 35 मिनिट तक वैधृति योग 20 घटी, 9 पल, दिन में 1 बजकर 48 मिनिट तक, नाग करण 3 घटी 6 पल सूर्योदय 5 बजकर 44 मिनिट, सूर्यास्त 6 बजकर 16 मिनिट सोमवती अमावस्या का दिन।

जातक का जन्म दिनांक :– 12/04/2021

जन्म समय :– 10 बजकर 22 मिनिट दिन में ।

जन्म स्थान :– वाराणसी उ.प्र.

अक्षांश :– 25 । 20

रेखांश :– 83 । 00

अयनांश :– 24। 9।15

स्थानिक जन्म समय :– 10 बजकर 24 मिनिट दिन में ।

स्थानिक समय संस्कार :–1 मिनिट 59 सेकेण्ड का।

सूर्योदय :– 5 बजकर 40 मिनिट प्रातः।

सूर्यास्त :– 6 बजकर 16 मिनिट सांय

इष्टकाल :– 11 घटी,44 पल,14 विपल

भयात :– 64। 38

भभोग :– 63।13

रेवती नक्षत्र 4 चरण

।। सूर्यादि स्पष्ट ग्रहाः ।।

| ग्रहाः | राशि | अंश | कला | विकला | नक्षत्र | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सूर्य | 11 | 28 | 21 | 30 | आर्द्रा 3 | गति | 58 | 49 |
| चन्द्रमा (अस्त) | 11 | 29 | 26 | 20 | रेवती 4 | गति | 759 | 17 |
| मंगल | 1 | 29 | 1 | 23 | मृगशिरा 2 | गति | 34 | 38 |
| बुध (अस्त) | 11 | 20 | 59 | 45 | रेवती 2 | गति | 112 | 58 |
| बृहस्पति | 10 | 1 | 10 | 41 | धनिष्ठा 3 | गति | 10 | 7 |
| शुक्र (अस्त) | 0 | 2 | 40 | 40 | अश्विनी 1 | गति | 74 | 40 |
| शनि | 9 | 18 | 1 | 3 | श्रवण 3 | गति | 2 | 48 |
| राहु (वक्री) | 1 | 19 | 20 | 57 | रोहिणी 3 | गति | 3 | 11 |
| केतु (वक्री) | 7 | 19 | 20 | 57 | ज्येष्ठा 1 | गति | 3 | 11 |

## 1.4.1 लंकोदय से स्वदेशीय उदयमान बनाने की विधि

लंका में ( निरक्ष देश में ) 278, 299, 323 ये पल क्रम से मेषादि तीन राशियों के एवं उसके बाद उत्क्रम से उक्त पल कर्कादि तीन राशियों के उदयपल होते हैं। इस प्रकार मेषादि 6 राशियों के उदयमान होते हैं। कन्या से मेष पर्यन्त उत्क्रम से जो उदयमान हैं वे तुलादि क्रम से मीन पर्यन्त 6 राशियों के उदयमान होते हैं।

साक्ष देशों में मेषादि तीन राशियों के चर खण्डों को लंकोदय में घटाने से एवं उसके बाद तीनों चरखण्डों को उत्क्रम से जोड़ने पर मेषादि 6 राशियों के उदयमान होते हैं। कन्या से मेष पर्यन्त उत्क्रम 6 राशियों के उदयमान जो हुए हैं उन्हें ही तुलादि से मीन पर्यन्त 6 राशियों का उदयमान जानना चाहिए।

## 1.4.2 काशी की पलभा से चरखण्ड का निर्माण

काशी की पलभा है। 5। 45 ये अंगुलात्मक पलभा है।

(1) :– (5। 45) $\times$ 10 = 57 प्रथम चरखण्ड प्राप्त हुआ ।

(2) :– (5। 45) × 8 = 46 द्वितीय चरखण्ड प्राप्त हुआ ।

(3) :– (5। 45) × 10/2 = 19 तृतीय चरखण्ड प्रात हुआ ।

## लंकोदय मान से स्वोदय मान बनाने की विधि

इन चरखण्ड का वेधोपलब्ध पलात्मक राशि मान में संस्कार किया तो वाराणसी (काशी) का उदयमान आयेगा।

जैसे –

(1) :– मेष 278 – 57 = 221 मीन (12)

(2) :– वृष 299 – 46 = 254 कुम्भ (11)

(3) :– मिथुन 323 – 19 = 304 मकर (10)

(4) :– कर्क 323 + 57 = 342 धनु (9)

(5) :– सिंह 299 + 46 = 345 वृश्चिक (8)

(6) :– कन्या 278 + 57 = 355 तुला (7)

## वाराणसी (काशी) उत्तरप्रदेश का उदयमान

अब पलभा द्वारा चरखण्ड का संस्कार करने पर काशी का स्वोदयमान प्राप्त हुआ ।

मेष 221 मीन

वृष 254 कुम्भ

मिथुन 304 मकर

कर्क 342 धनु

सिंह 345 वृश्चिक

कन्या 335 तुला

## 1.4.3 लग्न साधन

11। 28°। 21′। 30′′ स्पष्ट सूर्य में

+ 24°। 09′। 15′′ अयनांश जोड़ा

0। 22°। 30′। 45′′ यह हुआ सायन सूर्य । यहां पर सायन सूर्य मेष राशि के हैं।

अतः मेष राशि का भुक्तांश 22। 30। 45 है। इसका भोग्यांश बनाने के लिए 1 राशि में से घटाया ।

1। 00। 00। 00 एक राशि में से

22°। 30′। 45′′ भुक्तांश को घटाया

0। 07°। 29′।15′′ तो ये हुआ सायन सूर्य का भोग्यांष ।

अब यहां पर सायन सूर्य का भोग्यांश भी मेष राशि का ही होगा इसलिए वाराणसी के उदयमान से गुणा किया और 60 से भाग दिया तो ये आया ।

तृतीय अंक 15 × 221 = 3315 ÷ 60 = लब्धि 55, शेष 15

द्वितीय अंक 29×221 = 6409 + 55 (पूर्वलब्धि) = 6464÷60 + लब्धि 107, शेष 44

प्रथम अंक 7 × 221 = 1547 + 107 (पूर्वलब्धि) + 1654 ÷ 30

यहां पर प्रथम अंक 1654 में 30 का भाग दिया तो लब्धि आया 55 ये पल प्राप्त हुआ । तथा पहली अंक राशि पल है। आगे वाली राशियां विपलादि है। गणित क्रिया में केवल पलों का उपयोग होता है। इसलिए और राशियों का परित्याग किया तो मात्र 55 पल ग्रहण किया । तथा इष्टकाल को पलात्मक बनाया ।

इष्टकाल है 11। 44। 14 इसको पलात्मक बनाया तो ये हुआ 718 ये पलात्मक इष्टकाल हुआ । इसमें 55 पल घटाया । तो 718 – 55 = 663

यहां पर मेष राशि के उदयमान से गुणाकर के फल निकाला गया था अतः इसमें आगे वाली राशियों का उदयमान घटायेंगे।

663

– 254 वृष राशि

409

– 304 मिथुन राशि

शेष 105 अब यहां पर मिथुन राशि तक उदयमान इष्टकाल के पलों में से घट गया है। अतः मिथुन राशि शुद्ध हुई एवं कर्क राशि अशुद्ध हुई। तथा शेष में 30 से गुणा किया ।

105 × 30 = 3150 इसमें अशुद्ध राशि के उदयमान से भाग दिया तो 9 अंश आया । अब कला , विकला, लाने के लिए शेष में 60 का गुणा किया और पुनः कर्क के अदयमान से भाग दिया । तो 12 कला और 37 विकला आया जैसे –

3150 ÷ 342 = 9 अंश, शेष (72 ×60) = 4320

4320 ÷ 342 = 12कला शेष(216 × 60) = 12960

12960 ÷ 342 = 37 विकला आया ।

अब यहां पर मिथुन राशि घट गयी थी अतः लग्न के स्थान पर लग्नांक 3 माना जाएगा ।

03। 09° । 12′ । 37′′ तो ये हुआ सायन लग्न इसमें

– 24°। 09′ 15′′ अयनांश घटाया

02 ।15° । 03′ । 22′′ लग्नस्पष्ट आया स्पष्ट (मिथुन राशि का) निरूपण।

## 1.4.4 जन्मांक चक्र का निर्माण

इस प्रकार आप लोग पलभा,चरखण्ड,उदयमान द्वारा लग्न साधन कर सकते हैं। अब इस उदाहरण के अनुसार जन्मकुण्डली का निर्माण इस प्रकार होगा । जैसे यहां पर लग्न स्पष्ट आया 2 ।15°। 3′। 22′′ तो कुण्डली चक्र के प्रथम कोष्ठक में मिथुन लग्न का अंक अर्थात् 3 लिखेगें तथा इसके आगे अन्य कोष्ठकों मे कर्कादि राशियों का अंक बायें क्रम से लिखकर कुण्डली चक्र के 12 भाव बनायेंगे तथा ग्रह स्पष्ट से एक राशि बढ़ाकर ग्रहों को कुण्डली चक्र में बैठाते जाएगें इस प्रकार यहां पर मानकर चलिए कि सूर्य स्पष्ट है 11। 28° ।21′ 30′′ तो सूर्य मीन अर्थात 12 राशि के अंक में या दशम भाव में स्थित होगें तथा इसी प्रकार सभी ग्रहों को समझना चाहिए और जन्म कुण्डली चक्र का निर्माण करना चाहिए।

।। अथ जन्मांक चक्र मिदम्।।

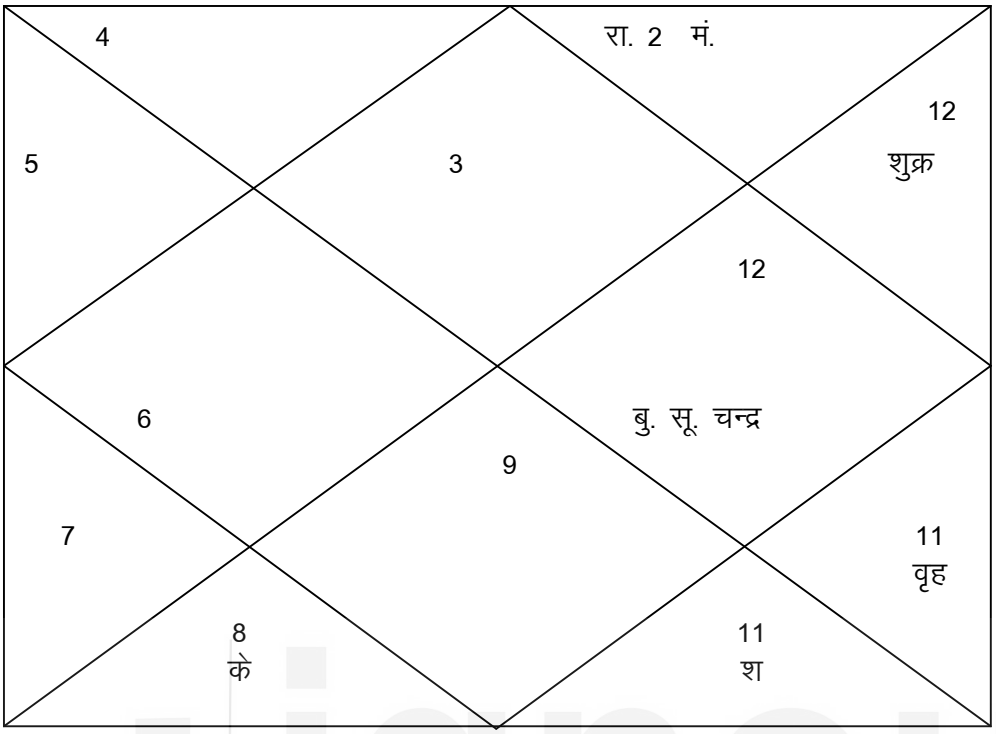


## 1.5 सारांश

इस प्रकार आपने इस इकाई में आपने पलभा से चरखण्ड, स्वोदयमान एवं स्पष्ट लग्न के साधन को उदाहरण सहित जाना। आपने यह जाना कि साधन हेतु अत्यावश्यक है। स्पष्ट लग्न के यह सभी अवयव प्रत्येक स्थान की ज्ञान सारिणी द्वारा प्रथम, द्वितीय चरखण्डों का व 8/3 का गुणा किया जाता है। चरखण्डों को राति से जोड़कर ये षादि 6 राशियों के स्वोदयमान प्राप्त होते हैं। यही उत्क्रम रीति से तुलादि 6 राशियों के स्वोदयमान होते हैं। इसके पश्चात लग्न–साधन, भोग्यांश या भुक्तांश निधि से करना चाहिए। यहाँ वाराणसी का उदाहरण लेकर लग्न साधन किया गया है। आप–अपने–अपने स्थान का उदाहरण लेकर लग्न साधन करें।

## 1.6 शब्दावली

अयनांश = नाड़ीवृत्त और क्रान्तिवृत्त के सम्पात बिन्दु के चलन के अंश

ग्रह स्पष्ट = तात्कालिक (या जन्मकालिक) ग्रह

इष्टकाल = सूर्योदय से जन्म समय तक के घट्यात्मक मान का नाम इष्टकाल होता है।

भयात = बीते हुए नक्षत्र का मान

भभोग = नक्षत्र का सम्पूर्ण मान

पलभा = विषुवदिन की मेषादि सायन सूर्य वाले दिन में 12 अंगुल की वास्तविक छाया पलभा।

लग्न = अपने अभीष्ट काल में क्रान्ति वृत का जो भाग उदयक्षितिज को स्पर्श करता है।

लंकोदय – लंका (निरक्षदेश) के क्षितिज में राशियों के उदित होनें में लगने वाला समय

स्वोदय – स्वदेश के क्षितिज में राशियों के उदित होने में लगाने वाला समय

## 1.7. बोध प्रश्न/अभ्यास प्रश्न

1) सारणी के द्वारा जयपुर के अक्षांश से पलभा का निर्माण कीजिए।
2) चरखण्ड बनाने के नियम को दर्शाते हुए जयपुर का चरखण्ड का निर्माण कीजिए।
3) जयपुर राजस्थान का उदयमान बनाइए।
4) पलभा, चरखण्ड, उदयमान दिल्ली का बनाइए।
5) 10 अक्टूबर 2.21 को प्रातः 10:30 बजे का लग्न साधन (स्वप्रदेश के अनुसार) कीजिए।

## 1.8 उपयोगी पुस्तकें

1) गोल परिभाषा, सम्पादक डॉ. कैलाश चन्द्र शर्मा, जगदीश संस्कृत पुस्तकालय जयपुर, प्रथम संस्करण 2005
2) भारतीय ज्योतिष, लेखक – डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री, भारतीय ज्ञानपीठ पैतीसवां संस्करण वर्ष 2002
3) बृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्, टीकाकार – पं.– पद्मनाभ शर्मा, प्रकाशक – चौखम्भा सुभारती प्रकाशन, वाराणसी, (भारतीय संस्कुति एवं साहित्य के प्रकाशक तथा वितरक ), के 37/117 गोपाल मन्दिर लेन पो. बो. न. 1129, वाराणसी 22101 दूरभाष 2335263
4) भारतीय कुण्डली विज्ञान, लेखक – मीठालाल हिम्मतराम ओझा, ई.स. 2008 देवर्षि प्रकाशन डी.3/40 मीरघाट वाराणसी।